प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्ययन मार्गदर्शिका

अध्याय एक

प्रेरितों के काम की पुस्तक की पृष्ठभूमि

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

विषय-वस्तु सूची

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें... 4
तैयारी.. 3
नोट्स.. 6

I. **परिचय** (0:26) 5

II. **लेखक** (1:58) 5
- क. लूका का सुसमाचार (3:04) 5
  1. सुस्पष्टता (3:38) 6
  2. अस्पष्टता (6:13) 6
- ख. आरम्भिक कलीसिया (9:38) 7
  1. पाण्डुलिपियाँ (9:53) 7
  2. आरम्भिक कलीसियाई अगुवे (13:04) 8
- ग. नया नियम (15:50) 9
  1. लेखक के बारे में सुराग (16:11) 9
  2. लूका (19:19) 9

III. **ऐतिहासिक समयावधि** (22:02) 10
- क. तिथि (22:17) 10
  1. 70 ई. सन् के बाद (23:00) 10
  2. 70 ई. सन् से पहिले (27:34) 11
- ख. वास्तविक श्रोतागण (30:07) 11
  1. थियुफिलुस (30:30) 11
  2. विस्तृत श्रोतागण (32:30) 12
- ग. सामाजिक संदर्भ (33:58) 12
  1. रोमी साम्राज्य (34:25) 12
  2. यहूदी (39:38) 14

IV. **धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि** (47:02) 15
- क. पुराना नियम (47:42) 15
  1. इतिहास (48:17) 15
  2. इस्राएल (55:48) 16
- ख. परमेश्वर का राज्य (1:04:37) 18
  1. यहूदी धर्मविज्ञान (1:04:50) 18
  2. यूहन्ना बपतिस्मादाता (1:06:57) 19
  3. मसीही धर्मविज्ञान (1:10:28) 20
- ग. लूका का सुसमाचार (1:15:04) 21
  1. यीशु (1:16:28) 21
  2. प्रेरित (1:19:43) 21

V. **सारांश** (1:24:15) 22

पुनर्विचार हेतु प्रश्न.. 24

लागू करने हेतु प्रश्न.. 29

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

इस अध्याय और मार्गदर्शिका का उपयोग कैसे करें

इस अध्ययन मार्गदर्शिका को सम्बद्ध वीडियो अर्थात् चलित दृश्य अध्यायों के साथ संयुक्त रूप में उपयोग करने के लिए निर्मित किया गया है। यदि आपके पास वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, तो यह अध्ययन मार्गदर्शिका ऑडियो अर्थात् श्रव्य अध्याय और/या अध्याय की मूल प्रतियों के संस्करणों के साथ कार्य करने के लिए भी सहायता देंगे। इसके अतिरिक्त, अध्याय और मार्गदर्शिका की मंशा एक सीखने वाले समुदाय के उपयोग के लिए की गई है, परन्तु साथ ही इनका उपयोग यदि आवश्यक है तो व्यक्तिगत् अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप अध्याय को देखें**
  - **स्वयं को तैयार करें –** किसी भी अनुशंसित अध्यायों को पढ़ कर पूरा कर लें।
  - **देखने के लिए समय निर्धारित करें –** इस मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड में, अध्याय को उन भागों में विभाजित किया गया है जो कि वीडियो के साथ सम्बद्ध हैं। प्रत्येक मुख्य भाग के साथ दिए हुए लघुकोष्ठकों में दिए हुए समय कोड्स का उपयोग, यह निर्धारित करता है कहाँ से अध्याय देखना आरम्भ किया जाए और कहाँ देखना समाप्त होता है। थर्ड मिलेनियम के अध्याय सघनता से सूचनाओं के साथ भरे हुए हैं, इसलिए हो सकता है कि आप इसे कई टुकड़ों में देखना चाहेंगे। इन टुकड़ों को मुख्य भागों के अनुसार होना चाहिए
- **जब आप अध्याय को देख रहे हैं तब**
  - नोट्स बनाएं — अध्ययन मार्गदर्शिका के नोट्स खण्ड अध्याय की मूल रूपरेखा की जानकारी रखते हैं, जिसमें प्रत्येक खण्ड को आरम्भ किए जाने के लिए समय कोड्स और कुँजी नोट्स सम्मिलित हैं जो कि आपका मार्गदर्शन इन सूचनाओं के लिए करेंगे। अधिकांश मुख्य विचारों को पहले से ही सारांशित कर दिया गया है, परन्तु इन्हें स्वयं के नोट्स के द्वारा पूरक किया जाना सुनिश्चित करें। आपको समर्थन देने वाली अतिरिक्त सामग्री को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को स्मरण करने, विवरण देने से और इनका बचाव करने में सहायता प्रदान करेंगे।
  - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिख लें –** जब आप वीडियो को देखते हैं, तब हो सकता है कि जो कुछ आप सीख रहे हैं उसके प्रति आपके पास टिप्पणियाँ और/या प्रश्न हों। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को हाशिये में लिखें ताकि इन्हें आप अध्याय को देखने के पश्चात् समूह के साथ साझा कर सकते हैं।
  - **अध्याय के भागों को देखते समय लघु ठहराव/पुन: आरम्भ बटन का उपयोग करें –** आप पाएंगे कि कुछ निश्चित स्थानों पर पुनर्विचार के लिए कठिन अवधारणाएँ, या रूचिपूर्ण बातों पर विचार विमर्श या अतिरिक्त नोट्स लिखने के लिए वीडियो का लघु ठहराव या इसे पुन: आरम्भ करना सहायतापूर्ण है।
- **आपके द्वारा अध्याय को देख लेने के पश्चात्**
  - **पुनर्विचार के लिए प्रश्नों को पूरा करें –** पुनर्विचार के लिए प्रश्न अध्याय की मूल विषय-वस्तु के ऊपर आधारित है। आपको उपलब्ध किए हुए स्थान में पुनर्विचार के प्रश्नों के उत्तर को देना चाहिए। इन प्रश्नों को एक समूह की अपेक्षा व्यक्तिगत् रूप से पूरा किया जाना चाहिए।
  - **उपयोग के लिए प्रश्नों का उत्तर दें/विचार विमर्श करें –** उपयोग हेतु प्रश्न ऐसे प्रश्न हैं जो कि इस अध्याय की विषय-वस्तु के साथ सम्बद्ध होते हुए मसीही जीवन यापन, धर्मविज्ञान और सेवकाई से सम्बधित हैं। उपयोग हेतु प्रश्न लिखित गृहकार्यों या समूह के विचार विमर्श के लिए विषयों के लिए उपयुक्त हैं। क्योंकि लिखित गृहकार्यों के लिए, यह अनुशंसा की जाती है कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बा नहीं होना चाहिए।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

तैयारी

- प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ें

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

नोट्स

I. परिचय (0:26)

जब हम बाइबल के लेखकों की पृष्ठभूमि, उनके संसार, उनके जीवनों और उनके उद्देश्यों के बारे में जान जाते हैं, तो हमारी समझ और सराहना पवित्रशास्त्र के लिए और भी ज्यादा गहरी हो जाती है।

II. लेखक (1:58)

पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के मौलिक लेखन को त्रुटि से मुक्त रखा, परन्तु उसने फिर भी मानव लेखकों के व्यक्तित्व, पृष्ठभूमि और इरादों को प्रयोग किया।

न तो तीसरा सुसमाचार और न ही प्रेरितों के काम की पुस्तक विशेष रूप से लेखक के नाम का उल्लेख करती है।

क. लूका का सुसमाचार (3:04)

दो प्रकार की श्रेणी के प्रमाण एक ही व्यक्ति के द्वारा प्रेरितों के काम की पुस्तक और लूका के लिखे होने का सुझाव देते हैं।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

1. सुस्पष्टता (3:38)

- प्रेरितों के काम की पुस्तक और तीसरा सुसमाचार थियुफिलुस को समर्पित किए गए हैं
- प्रेरितों के काम की पुस्तक का संकेत 'पहली पुस्तिका' के तौर पर किया गया है।
- इसी तरह की प्रस्तावनाएँ पुरातन साहित्यिक परम्परा को दर्शाता है

2. अस्पष्टता (6:13)

कई समानताएं तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के मध्य पाई जाती हैं:

- क्रमानुसार विवरण
- संयोजन की संरचना
- कालानुक्रमिक लम्बाई
- विषय
- एक ही कहानी

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

समानताएं एक सामान्य छुटकारे से भरे-हुए-ऐतिहासिक दर्शन, उद्देश्य और विश्वास की एक संयुक्त भावना की ओर संकेत करता है।

ख. आरम्भिक कलीसिया (9:38)

1. पाण्डुलिपियाँ (9:53)

पपाईरस[75] (ई. सन् 175-200) संकेत देते हैं कि लूका ने तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा।

मारटोरियन के टुकड़े (ई. सन् 170 -180) लूका के द्वारा तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिखे जाने की पुष्टि का संकेत देते हैं।

विरोधी मारसोनाईट की प्रस्तावना (160 -180 ई. सन्., तीसरे सुसमाचार का एक परिचय) लूका को ही तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक का वर्णन करता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

2. आरम्भिक कलीसियाई अगुवे (13:04)

इरानियुस (130- 202 ई. सन्): "लूका भी, जो पौलुस का सहकर्मी था, ने एक पुस्तक में उस द्वारा प्रचार किये हुए सुसमाचार को अभिलिखित किया है।"

अलैक्जैन्ड्रिया का क्लेमेंट (150 -150 ई. सन्): "प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका सम्बन्धित करता है..."

तरतुलियन (155 - 230 ई. सन्): "इसलिए, प्रेरित, यूहन्ना और मत्ती सबसे पहले हममें विश्वास को अविरत प्रयास से सिखा देते हैं... लूका और मरकुस इसे बाद में नवीनीकृत करते हैं।"

ईसुबीयुस (323 ई. सन्): "लूका... का ही उल्लेख... प्रेरितों के काम की पुस्तक में करता है।"

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

आरम्भ की कलीसिया के साहित्य में ऐसा एक भी संकेत नहीं मिलता है जिसमें तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए लेखन लूका के सिवाय किसी अन्य को नामित किया गया हो

ग. नया नियम (15:50)

1. लेखक के बारे में सुराग (16:11)

- न तो प्रेरित या न ही यीशु के जीवन का एक प्रत्यक्षदर्शी ।
- यूनानी भाषा की लेखन शैली यह संकेत देती है कि लेखक अच्छी तरह से शिक्षित था।
- पौलुस के साथ एक सहयात्री था।

2. लूका (19:19)

- वह एक प्रेरित नहीं था।
- अच्छी तरह शिक्षित : एक चिकित्सक
- पौलुस के साथ यात्रा करने वाला एक सहकर्मी था।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

III. ऐतिहासिक समयावधि (22:02)

क. तिथि (22:17)

1. 70 ई. सन् के बाद (23:00)

आशावाद :

- प्रेरितों के काम की पुस्तक बहुत ज्यादा आरम्भ की कलीसिया के इतिहास के बारे में सकारात्मक है जो कि बहुत पहले लिख दिया गया था।

- परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक कलीसिया के अन्दर और बाहर की सभी तरह की समस्याओं का निपटारा करता है।

जोसेफुस :

- जोसेफुस के सम्बन्धित लेखन 79 ई. सन्., से पहिले संकलित किए गए थे, और 85 ई. सन्., से पहिले उपलब्ध नहीं हुए थे।

- थियूदास (प्रेरितों के काम 5:36) यहूदी क्रान्तिकारी हो सकता है जिसके बारे में जोसेफुस की *ऐन्टीक्विटीस* नामक पुस्तक (20.97) में उल्लेख हुआ है।

- गलील का यहूदा ((प्रेरितों के काम 5:37)) जोसेफुस की 2री पुस्तक *यहूदी लड़ाइयाँ* (2:117-118) और *ऐन्टीक्विटीस* नामक पुस्तकों (18.1-18) में प्रगट होता है।

- मिस्री (प्रेरितों के काम 21:38) में जोसेफुस की *यहूदी लड़ाइयाँ* (2.261-263) और *ऐन्टीक्विटीस* नामक पुस्तक (20.171) में प्रकट होता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

- हेरोदेस की मृत्यु का विवरण (प्रेरितों के काम 12:19-23) में जोसेफुस की *ऐन्टीक्विटीस* नामक पुस्तक (19.343-352) में दिए विवरण जैसा है।

ऐसा जान पड़ता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक और जोसेफुस:

- ने जानी-पहचानी प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन किया या

- एक ही सामान्य स्रोत पर निर्भर रहे

2. 70 ई. सन् से पहिले (27:34)

प्रेरितों के काम की पुस्तक पौलुस के घर के अन्दर रोम में कैद होने के साथ बन्द होते हुए, महत्वपूर्ण घटना के साथ रूक जाता है :

- रोम में आग लगी (64 ई. सन्.,)

- पौलुस की शहादत (65 ई. सन्.,)

- मन्दिर का नाश किया जाना (70 ई. सन्.,)

ख. वास्तविक श्रोतागण (30:07)

1. थियुफिलुस (30:30)

- लूका का संरक्षक है

- लूका का विद्यार्थी है

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

2. विस्तृत श्रोतागण (32:30)

पहली सदी की कलीसिया कई विषयों के साथ संघर्ष कर रही थी जिन्हें लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में उल्लिखित किया है :

- यहूदियों और अन्यजाति विश्वासियों में झगड़े
- नेतृत्व आधारित विभाजन
- धर्मसिद्धान्तों की गलतियाँ एवं झूठे शिक्षक
- कलीसिया और सरकार के मध्य दिवानी झगड़े
- स्त्रियों और गरीबों के विषयों के ऊपर
- सतावों, दुखों और बन्दीगृह में डाल दिए जाने के ऊपर

लूका का इरादा कई भिन्न विश्वासियों द्वारा इसे पढ़े जाने का रहा था।

ग. सामाजिक संदर्भ (33:58)

1. रोमी साम्राज्य (34:25)

- पूरे भूमध्य संसार पर विजय प्राप्त कर इसे अपने नियंत्रण में कर लिया था, और इसने अपने साम्राज्य को वर्तमान के ब्रिटेन, उत्तरी अफ्रीका और एशिया के कुछ भागों तक विस्तार कर लिया था।

- साम्राज्य अभी भी विस्तार कर रहा था

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

- राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव :
    - सरकार : स्थानीय अधिकारियों के ऊपर शक्तिशाली नियंत्रण करना था।
    - जनसंख्या : रोमन नागरिकों को विजयी देशों की जनसंख्या में समाहित कर दिया गया था।
    - लोक निर्माण कार्य : सड़कों, विस्तृत इमारतों और सार्वजनिक बैठकों के स्थानों का निर्माण करना।
- धार्मिक प्रभाव :
    - कैसर को उसके लोगों के ऊपर प्रभु और देवता के रूप में देखा जाता था।
    - विजय कर लिए हुए लोगों को उनकी धार्मिक प्रथाओं को पालन करते रहने की अनुमति दी गई थी
    - लोगों से कैसर की श्रेष्ठता को भी स्वीकार करने की मांग की गई थी।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

2. यहूदी (39:38)

अ. घनिष्ठ सम्बन्ध

- विरासत
- पवित्रशास्त्र
- अधिकारी

ब. बुनियादी मतभेदों

- यीशु
- व्याख्या
- अन्यजाति

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

IV. धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि (47:02)

क. पुराना नियम (47:42)

1. इतिहास (48:17)

लूका ने आरम्भ की कलीसिया के उन तरीकों के बारे में लिखा जिसने इतिहास के ऊपर पास्कल के तीनपक्षीय दृष्टिकोण के चिंतन को प्रकट किया है।

- सृष्टि
  - सामान्य रूप में
  - प्रेरितों के काम की पुस्तक में
- पतन
  - सामान्य रूप में
  - प्रेरितों के काम की पुस्तक में
- छुटकारा
  - सामान्य रूप में
  - प्रेरितों के काम की पुस्तक में

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

2. इस्राएल (55:48)

लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को इस्राएल के इतिहास के ऊपर आधारित हो कर लिखा ।

- अब्राहम

  परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए दो मुख्य उद्देश्यों के लिए बुलाया :

  - अब्राहम एक बड़ी जाति का पिता होगा।
  - अब्राहम के माध्यम से पृथ्वी पर सभी लोग आशीषें पाएंगे।

  लूका उल्लेख करता है :

  - मसीह में उद्धार का आशीर्वाद यहूदियों के लिए, अब्राहम को परमेश्वर के द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं को पूरे करने के द्वारा आया।
  - यहूदी विश्वासी मसीह के सुसमाचार को अन्यजाति तक, अब्राहम को परमेश्वर द्वारा दी गई बाकी की प्रतिज्ञाओं को पूरा करते हुए ले गए।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

- मूसा की अधीनता में निर्गमन

  मूसा ने भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर एक दिन उसके जैसे एक अन्य भविष्यद्वक्ता को भेजेगा जो कि उसके लोगों को पाप के दासत्व से मुक्त कराएगा।

  लूका ने इंगित किया :

  - यह भविष्यद्वक्ता यीशु के रूप में आया।

  - यीशु का इन्कार करना मूसा और व्यवस्था का इन्कार करना था

- दाऊद का राजवंश

  परमेश्वर ने दाऊद के घराने को :

  - स्थाई राजवंश के रूप में उसके लोगों को नेतृत्व देने के लिए चुना।

  - परमेश्वर के राज्य को इस्राएल से लेकर पृथ्वी की छोर तक बढ़ा दिया।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

लूका ने यीशु को निम्न रूप में समझ लिया था :

- दाऊद का पुत्र ।
- परमेश्वर के राज्य का राजकीय शासक था ।
- उसके राज्य को कलीसिया के माध्यम से विस्तार कर रहा था।

लूका चाहता था कि उसके पाठक यह समझ लें कि यीशु :

- अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं का वंशज था ।
- मूसा के जैसा भविष्यद्वक्ता ।
- दाऊदवंशीय अन्तिम राजा था।

ख. परमेश्वर का राज्य **(1:04:37)**

1. यहूदी धर्मविज्ञान **(1:04:50)**

परमेश्वर इस्राएल में मसीहवंशीय उद्धारक को भेजेगा ।

- जलोती: परमेश्वर इस्राएलियों के द्वारा रोमी अधिकारियों के विरूद्ध विद्रोह को बढ़ाना चाहता था।
- रहस्योदघाटनवादी: परमेश्वर अलौलिक तरीके से उसके शत्रुओं को नाश करने के लिए हस्तक्षेप करेगा और विजेताओं के रूप में अपने लोगों को स्थापित करेगा।
- कानूनविद् (जैसे फरीसी और सदूकी): परमेश्वर तब तक हस्तक्षेप नहीं करेगा जब तक इस्राएल व्यवस्था के प्रति पूर्ण विश्वासयोग्य नहीं हो जाता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

2. यूहन्ना बपतिस्मादाता **(1:06:57)**

- सच्चे पश्चाताप के लिए बुलाहट दी।
- शुभ सन्देश की घोषणा की कि मसीह परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर लाने वाला था।
- सही तरह से यीशु की पहचान मसीह के रूप में की।
- घोषणा की कि मसीह पवित्र आत्मा की महान् आशीषों और शुद्धता को लाएगा, जिसमें न्याय भी सम्मिलित है।

यूहन्ना भविष्य के लिए नहीं देखता कि मसीह कई चरणों में इस संसार में उद्धार और न्याय को लाएगा।

यीशु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को आश्वस्त करता है कि वह पुराने नियम में दी हुई मसीहवंशीय भविष्यद्वाणियों की आशाओं को पूरी करने की प्रक्रिया में लगा हुआ था।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

3. मसीही धर्मविज्ञान (1:10:28)

मसीही धर्मविज्ञान मसीही सुसमाचार के साथ निकटता से सम्बन्धित है:

परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर यीशु जो मसीह है के व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा आ पहुँचा है, और यह अपने बड़े समापन की ओर जैसे जैसे परमेश्वर उन लोगों को मुक्ति प्रदान कर रहा है जो कि इसे यीशु जो मसीह से प्राप्त करते और उसमें भरोसा रखते हैं, बढ़ रहा है।

लूका निम्न पर जोर देता है:

- परमेश्वर का मसीह में किया गया महान् कार्य उद्धार की वास्तविकता के ऊपर है।

- लोगों की महत्वपूर्णता जो मसीह की सच्चाई को व्यक्तिगत् तौर पर स्वीकार करें ताकि उनके जीवनों में परिवर्तन आ जाए।

मसीह का राज्य धीरे धीरे कलीसिया के द्वारा और लोगों के व्यक्तिगत् परिवर्तन के द्वारा विकास होता रहता है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

ग. लूका का सुसमाचार (1:15:04)

प्रेरितों के काम की पुस्तक लूका में आरम्भ हुई कहानी का दूसरा हिस्सा है।

1. यीशु (1:16:28)

- भविष्यद्वक्ता जिसने परमेश्वर के राज्य के आने के बारे में घोषणा की।
- राजा जो राज्य को अपनी सामर्थ्य से उसके सिंहासन से नीचे ला रहा है।

यीशु ने शिक्षा दी कि वह ऐसे राज्य को ला रहा था जो कि धीरे धीरे और विभिन्न चरणों में आएगा।

2. प्रेरित (1:19:43)

यीशु ने प्रेरितों को निर्देश दिया कि वे उसके कार्य को राज्य को बढ़ाने के द्वारा आगे बढ़ाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

यीशु के मरे हुओं में से पुनरुत्थान और उसके द्वारा स्वर्ग में चढ़ने तक उसने प्रेरितों को शिक्षा देने में समय को व्यतीत किया।

प्रेरितों ने:

- परमेश्वर के राज्य के वर्तमान ढाँचे में कलीसिया की स्थापना की।

- राज्य के सुसमाचार को नए स्थानों और लोगों के पास ले आए ।

V. सारांश (1:24:15)

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

पुनर्विचार हेतु प्रश्न

1. लूका के सुसमाचार से मिलने वाले स्पष्ट और अस्पष्ट प्रमाणों के ऊपर विचार विमर्श करें जो बड़ी दृढ़ता से सुझाव देते हैं कि एक ही व्यक्ति ने दोनों पुस्तकें लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा है।

2. आरम्भ की कलीसिया से मिलने वाले ऐतिहासिक प्रमाणों के ऊपर विचार विमर्श कीजिए जो इस विचारधारा का समर्थन करते हैं कि एक ही व्यक्ति ने लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा है।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

3. प्रेरितों के काम की पुस्तक के बारे में नए नियम से आप कौन से सुरागों को प्राप्त कर सकते हैं? कैसे ये सुराग इस विचार का समर्थन करते हैं कि लूका ने ही प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा था?

4. कौन से प्रमाण सुझाव देते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 70 ईस्वी सन्., के पश्चात् लिखी गई थी? कौन से प्रमाण सुझाव देते हैं कि यह 70 ईस्वी सन्., से पहले लिखी गई थी?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

5. प्रेरितों के काम की पुस्तक के मूल पाठकों का विवरण दें।

6. प्रेरितों के काम की पुस्तक का सामाजिक संदर्भ में विवरण दें जिसमें (1) रोमी साम्राज्य और (2) कलीसिया और यहूदियों के मध्य के सम्बन्ध का विचार विमर्श सम्मिलित हो।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

7. दर्शाएँ कि लूका के धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोण सामान्य रूप में पुराने नियम के इतिहास के दृष्टिकोण और विशेष रूप में इस्राएल के इतिहास के इसके दृष्टिकोण के ऊपर आधारित थे।

8. परमेश्वर के मसीहवंशीय राज्य की मसीही विचारधारा की तुलना और इसके विरोधों को समकालीन यहूदी धर्मविज्ञान के दृष्टिकोणों और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दृष्टिकोण के साथ करें।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

9. किस तरह से लूका के सुसमाचार में परमेश्वर के राज्य का धर्मविज्ञान हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक के सन्देश को समझने के लिए तैयार करता है? आपके उत्तर में, यीशु और प्रेरितों की भूमिकाओं के ऊपर विशेष ध्यान दें।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा

लागू करने हेतु प्रश्न

1. कैसे लूका की ग्रन्थकारिता हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक को स्वयं के जीवन के ऊपर लागू करने और बेहतर समझ के लिए सहायता करती है?

2. किस तरह से हमारे जीवन और धर्मविज्ञान हमारी अपनी सरकार और संस्कृति से प्रभावित होते हैं?

3. अविश्वासी यहूदी और मसीही विश्वासियों में आज कौन सी कुछ समानताएँ और भिन्नताएँ हैं? कैसे इन समानताओं और भिन्नताओं को समझना आधुनिक यहूदियों को सुसमाचार सुनाने में हमारी सहायता कर सकता है?

4. क्यों यहूदी और अन्यजाति पृष्ठभूमि से आए हुए मसीही विश्वासियों को कलीसिया में पूर्ण सदस्यता मिली हुई है? क्यों यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि दोनों अर्थात् यहूदी और अन्यजाति पृष्ठभूमि के मसीही विश्वासी को बराबर का अधिकार है?

5. किस तरह से पुराने नियम का संसार के इतिहास के प्रति धारणा मसीही विश्वासी होने के नाते आधुनिक संसार के प्रति हमारी सोच को समझ प्रदान करता है?

6. किस तरह हम वर्तमान में परमेश्वर के राज्य में भागीदार हों? राज्य के निर्माण की प्रक्रिया में हमारी क्या भूमिका है?

7. परमेश्वर के राज्य का विस्तार जैसे जैसे लोग यीशु को मसीह के रूप में स्वीकार करते और उसमें भरोसा रखते के रूप में हो रहा है की सच्चाई के प्रकाश में कैसे हमारी सोच और प्राथमिकताओं को परिवर्तित करना चाहिए?

8. इस अध्ययन से कौन सी सबसे महत्वपूर्ण बात को आपने सीखा है?

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ www.thirdmill.org 2009 के द्वारा